गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

परम पावन तीर्थ में आवास संबंधी

अनुशासन, अनुबंध

शान्तिकुञ्ज एक परम पावन तीर्थ स्थल है, जिसका उद्देश्य है विद्या विस्तार और प्रतिभा परिष्कार द्वारा राष्ट्र को सशक्त समर्थ और जीवन्त बनाना। इस परिसर में पधारने पर आपका हार्दिक स्वागत है। आश्रम परिसर की पवित्रता अक्षुण्ण बनी रहे, उस निमित्त आपसे निम्न अनुशासन बनाये रखने का विनम्र अनुरोध है।

१. शान्तिकुञ्ज आध्यात्मिक संस्कारशाला है, यहाँ के सभी धार्मिक क्रियाकलापों में भावनापूर्वक भाग लें।

२. अपने सामान की सुरक्षा का स्वयं ध्यान रखें। अपरिचित अनजान व्यक्ति कमरे में हों तो उसकी सूचना तत्काल समयदान कार्यालय/स्वागत कक्ष, सुरक्षा नियंत्रण कक्ष या निकटस्थ सुरक्षाकर्मी को दे दें।

३. किसी भी जानकारी-मार्गदर्शन के लिये कृपया स्वागत कक्ष, जन सम्पर्क अथवा समयदान कार्यालय से सम्पर्क करें। असुविधा या शिकायत भी यहीं बतायें।

४. परिचय पत्र कुरते या कमीज पर लगाये रखें, ताकि यहाँ के स्वयं सेवक अनावश्यक पूछताछ न करें। अबोध बच्चों की पीठ पर परिचय पत्र अवश्य लगा दें।

५. अपना कीमती सामान तथा रुपये पैसे स्वागत कक्ष के पास अमानत कक्ष में जमा करा कर रसीद प्राप्त कर लें। वहीं से आवश्यकतानुसार लेते रहें।

६. यहाँ नशीली वस्तुओं का सेवन वर्जित है। परिसर के अन्दर बीड़ी सिगरेट न पियें, पान न खायें।

७. चीखना, चिल्लाना, शोर मचाना, जोर-जोर से बातें करना, सीटी बजाना सर्वथा वर्जित है। प्रातःकाल सोकर उठने से लेकर यज्ञ पूर्णाहुति तक यथा सम्भव मौन व्रत पालन करें। बच्चे शोर न मचायें, यह ध्यान रखें।

८. वेशभूषा यथा संभव भारतीय और सभ्य शालीनों जैसी रखें, भड़कीले, चुस्त वस्त्र कदापि न पहनें। पति-पत्नी हैं तो भी हाथ पकड़ कर न चलें, अशोभनीय हरकतें न करें।

९. परायी बहन-बेटियों से कृपया वार्तालाप न करें, बहुत आवश्यक हो तो सिर नीचा रखकर बात करें।

१०. शौचालयों के उपयोग के बाद उन्हें पानी डालकर स्वच्छ अवश्य करें, नल खुले न छोड़ें।

११. अपने आवास, बरामदे, जीने आदि की स्वच्छता पर ध्यान दें। कूड़ा कचरा कूड़ा पात्र में ही डालें, जहाँ-तहाँ न फैलाएँ। जहाँ-तहाँ थूक कर अपवित्रता न पैदा करें।

१२. बिजली का प्रयोग जितना आवश्यक हो उतना करें, अनावश्यक बल्ब एवं पंखे न चलने दें।

१३. अपने वाहन कृपया पार्किंग स्थलों में ही खड़े करें, सड़कें गन्दी न करें।

१४. भोजनालय में प्रवेश करते समय निरर्थक वार्तालाप एवं जूठन छोड़ना अन्न देवता का अपमान समझा जाता है। बर्तन स्वच्छ करके जहाँ से लें, वहीं रखें।

१५. आश्रम के प्रशिक्षण में आये प्रतिभागीगण कृपया भोजन नियत समय पर करें, पश्चात् आग्रह न करें।

१६. खिड़कियों, झरोखों एवं बरामदों से नीचे सामान न फेंकें।

१७. आश्रम से प्राप्त वस्तुएँ यथा स्थान लौटाना न भूलें।

१८. फूल न तोड़ें, पौधे न उजाड़ें, जड़ी-बूटियाँ न तोड़ें। विद्यार्थी अध्ययन के लिये पत्तियाँ संग्रह करना चाहें तो पहले उपवन विभाग से सम्पर्क करें।

१९. महिलायें गन्दे कपड़े शौचालयों में न डालें, उससे वे रुक जाती हैं, उन्हें कूड़ादान में डालें।

२०. बाहर घूमने जायें तो स्वागत कक्ष में जानकारी देकर जायें, ताकि आवश्यकता पड़ने पर ढूँढ़ना न पड़े। यथा समय लौटें, देर से आयें तो भोजन बाहर से करके आ जायें। आश्रम में भोजन सायं ६.३० बजे तक ही चलता है।

२१. प्रात:काल प्रणाम, अखण्ड दीप दर्शन अथवा यज्ञादि पवित्र संस्कारों के समय शान्ति बनाये रखें, पंक्तिबद्ध रहें और नियत प्रतिबन्धों का पालन करें। भेंट का समय दोपहर १२ बजे से है। इसके लिए सूचनार्थ प्रतिक्षालय से पहले ही सम्पर्क कर लें। भेंट के समय झोले, अटैची आदि सामान ले जाना वर्जित है।

२२. प्रवचन के समय बच्चे, वृद्ध महिलायें और जिन्हें बीच में उठना हो, वे कृपया पिछली पंक्तियों पर बैठें। प्रवचन हॉल में वार्तालाप न करें।

२३. इस आश्रम में उत्पादक श्रम कर सकने वाले मिशन के क्रियाकलापों में तन्मय होकर काम करने वाले समाज सेवियों के लिए ही स्थायी निवास का प्रबंध हैं। जो कोई भी इस दृष्टि से रुकना चाहें, वे अपना दृष्टिकोण स्पष्ट कर पहले व्यवस्थापक मण्डल से चर्चा कर लें।

२४. इस क्षेत्र में गंगा तेज बहाव, गहरे खड्डे आदि के कारण असुरक्षित है। स्नान करने न जाएँ, जाएँ तो किनारे बैठकर स्नान करें। यहाँ पर अक्सर दुर्घटनायें हो जाती हैं।

***

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज के

¥ÙéÎaÙ – ©UÂeeÎaÙ

शान्तिकुञ्ज युग ऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं शक्ति स्वरूपा माता भगवती देवी के तप से अनुप्राणित, आध्यात्मिक चेतना का उद्‌गम केन्द्र है, मानव के नव निर्माण की एक प्रयोगशाला है तथा एक ऐसा स्थान है, जहाँ राष्ट्र के अभिनव निर्माण के प्रयोग निरन्तर चलते रहते हैं। इस प्रगतिशील आश्रम में प्राचीन काल के ऋषियों के गुरुकुलों, आरण्यकों जैसे अनुशासन पाले जाते हैं। यहाँ नियमित रूप से चलने वाले संजीवनी साधना सत्रों, ५ दिवसीय परामर्श सत्रों, विशेष परामर्श हेतु पूर्व सूचना देकर या स्वीकृति लेकर आये स्वस्थ व्यक्तियों को ही ठहराया जाता है। इस तीर्थस्थली में ठहरने वालों के लिए निर्धारित नियमों का पालन अनिवार्य है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति में यहाँ जाति, वंश, लिङ्ग, धर्म, सम्प्रदाय का किसी तरह कोई भेदभाव नहीं है। यहाँ के वातावरण को इस तरह विनिर्मित किया गया है, जिससे कण-कण में प्राण ऊर्जा, साधना की प्रचंड ऊष्मा विद्यमान है। यहाँ का प्रशिक्षण, यहाँ की परम्पराएँ इतनी प्रखर हैं कि उनमें भाग लेने वाला कोई भी व्यक्ति कोरा नहीं जा सकता है। सामान्य व्यक्ति भी यहाँ से असामान्य आत्मिक शक्ति और मनोबल लेकर लौटते हैं।

तीर्थ निवास को तीर्थ सेवन कहा गया है, अर्थात् वहाँ की प्रवृत्तियों को आत्मसात् करने से ही वह लाभ मिलते हैं। उसके लिए यहाँ के दैनिक कार्यक्रम और विशिष्ट क्रिया-कलापों की पूरी जानकारी आवश्यक है। यह पत्रक यहाँ प्रवेश लेते ही सर्वप्रथम ध्यानपूर्वक पढ़ लें :-

दैनिक कार्यक्रम	**अप्रैल से सित.**	**अक्टू. से मार्च**
जागरण, प्रार्थना, दैनिक कार्य, उपासना आदि	३.३०	४.००
प्रातः आरती	४.००	४.३०
प्रातः ध्यान, सामूहिक जप	४.३०	५.००
अमृतवाणी	५.०५	५.३५
अखण्ड दीप दर्शन, ऋषि युग्म की चरण पादुकाओं को प्रणाम	५.१५	५.४५
सामूहिक यज्ञ एवं समस्त संस्कार	५.१५	५.४५
प्रातः सत्संग प्रवचन	७.४५	८.००
भोजन-प्रसाद	९.३०	१०.००
मध्याह्न कक्षा, गोष्ठी	१२.०० से	१२.०० से
अखण्ड दीपक एवं गुरुसत्ता की चरण पादुकाओं को नमन, भेंट परामर्श	१२.३०	१२.३०
ज्योति अवतरण साधना	१.४०	१.४०
सामूहिक श्रमदान	३.३०	३.००

सायंकालीन भोजन	४.३०	४.००
सायं आरती	५.००	५.००
सायंकालीन नादयोग ध्यान साधना	६.००	६.००
संकीर्तन एवं कथा अथवा वीडियो	६.१५	६.१५
रात्रि विश्राम	९.००	९.००

☞कोई भी संस्कार, दीक्षा, देवस्थापना एवं तीर्थ श्राद्ध कराना हो तो एक दिन पूर्व **संस्कार प्रकोष्ठ** में नाम लिखायें और जो समय व स्थान बताया जाये, वहाँ समय पर उपस्थित रहें।

☞दीक्षा, विवाह संस्कार के लिये आवश्यक परामर्श हेतु **संस्कार प्रकोष्ठ** में तथा पूर्णाहुति के लिये सुपाड़ी, गोले हेतु **जनरल स्टोर** से सम्पर्क करें।

☞ओढ़ने बिछाने के बिस्तर, झाड़ू, बल्ब, ताला, बाल्टी आदि दैनिक उपयोग की वस्तुएँ **रजाई-गद्दा स्टोर्स** से मिलती हैं। काम होने पर यथा स्थान जमा करें।

☞ध्यान साधना, कर्मकाण्ड प्रशिक्षण, गीत संगीत, पूज्य गुरुदेव-वन्दनीया माताजी के प्रवचनों के आडियो-वीडियो कैसेट **कैसेट स्टाल्स** पर मिलते हैं ।

☞**साहित्य स्टाल** त्रिपदा भवन के सामने है। वहाँ से मिशन की पुस्तकें खरीदी जा सकती हैं। आश्रम की सभी पत्र-पत्रिकाओं (१) अखण्ड ज्योति (२) युग निर्माण योजना (३) युग शक्ति गायत्री गुजराती (४) मराठी (५) उड़िया (६) तमिल (७) तेलगू (८) बंगला तथा (९) **पाक्षिक प्रज्ञा अभियान** की सदस्यता के लिये स्वागत कक्ष, साहित्य स्टाल, प्रज्ञा-१ के समीप, लेखा कार्यालय के समीप तथा ब्रह्मवर्चस इन सभी स्थानों में चन्दा जमा किया जा सकता है। जमा राशि की रसीद अवश्य लें।

☞अनुदान-चरण पादुकाओं पर चढ़ाकर नीचे लेखा कार्यालय से रसीदें लें, यदि रुकने का समय न हो तो अनुदान **लेखा कार्यालय** में जमा करके रसीद लें।

☞मध्याह्न चरण पादुकाओं के दर्शन के पूर्व **प्रतीक्षालय** में मिशन की योजनाओं व प्रणेताओं के जीवन दर्शन पर वीडियो सतत चलता रहता है। आश्रम परिसर घूम लेने के बाद वहाँ बैठकर सभी उसे बारी-बारी देख सकते हैं।

☞यहाँ निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण का प्रबंध है, उसके लिए १ से ३.३० बजे तक **डिस्पेंसरी** के ऊपर स्वास्थ्य परीक्षण कक्ष से सम्पर्क करें।

☞आयुर्वेदिक औषधियाँ **जड़ी-बूटी स्टॉल्स** पर मिलती हैं।

☞शिविरों की स्वीकृति के लिए स्वागत कक्ष के ऊपर **शिविर कार्यालय** से संपर्क करें, कार्यक्रम के संदर्भ में प्रतीक्षालय के सामने **संगठन कार्यालय** से सम्पर्क करें। समयदान के सम्बन्ध में प्रतीक्षालय के पास **समयदान कार्यालय** से सम्पर्क करें।

☞पोस्ट ऑफिस, पंजाब नेशनल बैंक एवं टैलीफोन बूथ एवं जनरल स्टोर की सुविधाएँ आश्रम परिसर में ही हैं।

शान्तिकुञ्ज-एक संक्षिप्त परिचय

➢गंगा की गोद, हिमालय की छाया में विनिर्मित शान्तिकुञ्ज गायत्री तीर्थ हरिद्वार-ऋषिकेश मार्ग पर स्थित है, जो युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं०श्रीराम शर्मा आचार्य एवं माता भगवती देवी शर्मा की प्रचण्ड तप साधना के संस्कारों से अनुप्राणित है। यह जाग्रत् तीर्थ लाखों-करोड़ों गायत्री साधकों का गुरुद्वारा है।

➢शान्तिकुञ्ज एक आध्यात्मिक सैनिटोरियम के रूप में विकसित किया गया है, जहाँ शरीर, मन एवं अंत:करण को स्वस्थ समुन्नत बनाने के लिए अनुकूल वातावरण, मार्गदर्शन एवं शक्ति अनुदानों का लाभ उठाया जा सकता है।

➢यहाँ गायत्री माता का भव्य मंदिर तथा सप्तऋषियों की प्रतिमाओं की स्थापना है। गायत्री साधक यहाँ के नियमित चलने वाले साधना प्रधान सत्रों में भाग लेकर नवीन प्रेरणाएँ तथा दिव्य प्राण ऊर्जा के अनुदान पाकर अपनी आध्यात्मिक उन्नति में सहायता पाते हैं।

➢सन् १९२६ से प्रज्वलित अखण्ड दीप यहाँ स्थापित है, जिसके सान्निध्य में पूज्य गुरुदेव पं०श्रीराम शर्मा आचार्य ने कठोर तपश्चर्या करके इसे विशाल गायत्री परिवार की सारी महत्वपूर्ण उपलब्धियों का मूल स्रोत बनाया। इसके सान्निध्य में करोड़ों से अधिक गायत्री जप सम्पन्न हो चुके हैं। इसके दर्शन मात्र से दिव्य प्रेरणा एवं शक्ति संचार का लाभ सभी को मिलता है।

➢आश्रम की तीन विराट् यज्ञशालाओं में नित्य नियमित रूप से हजारों साधक गायत्री यज्ञ सम्पन्न करते हैं। भारतीय संस्कृति के अंतर्गत सभी संस्कार जैसे- अन्नप्राशन, मुंण्डन, विद्यारंभ, यज्ञोपवीत, विवाह तथा श्राद्ध कर्म आदि यहाँ नि:शुल्क सम्पन्न कराये जाते हैं, इनके व्यावहारिक तत्वदर्शन से प्रभावित होकर यहाँ नित्य बड़ी संख्या में संस्कारों के लिए लोग आते हैं।

➢शान्तिकुञ्ज के भव्य जड़ी-बूटी उद्यान में ३०० से भी अधिक प्रकार की दुर्लभ-सर्वोपयोगी वनौषधियाँ लगायी गयी हैं। विश्व भर के आयुर्वेद कॉलेजों के शिक्षार्थी तथा वैज्ञानिक यहाँ का वनौषधि उद्यान देखने आते हैं। विभिन्न ग्रह-नक्षत्रों के लिए भिन्न प्रकार की दिव्य औषधियों का एक ज्योतिर्विज्ञान सम्मत उद्यान यहाँ की एक विलक्षणता है।

➢यहाँ शारीरिक-मानसिक जाँच-पड़ताल निष्णात चिकित्सकों द्वारा यहाँ नि:शुल्क की जाती है तथा साधना के साथ-साथ वनौषधि प्रधान उपचार-परामर्श भी दिया जाता है।

➢जड़ी-बूटियों द्वारा जन-सामान्य के लिए अत्यंत सस्ती, सुगम एवं प्रतिक्रिया हीन चिकित्सा पद्धति के विस्तार-विकास के लिए यहाँ एक केन्द्र स्थापित है। चौदह वनौषधियों के सम्मिलित योग से यहाँ बनी **प्रज्ञापेय** का प्रयोग चाय के स्थान पर बड़ी मात्रा में देश तथा विदेश में हो रहा है। इसने अनेक व्यक्तियों के दुर्व्यसन छुड़वाये हैँ।

➢ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान में अध्यात्म विज्ञान के महत्वपूर्ण सूत्रों को भौतिक विज्ञान के आधार पर शोध-प्रयोग द्वारा पुन: स्थापित करने का कार्य किया जा रहा है। मंत्रशक्ति, ध्यान,प्राणायाम, यज्ञ आदि सभी विधाओं के विज्ञान सम्मत प्रतिपादनों से लाखों की संख्या में विचारशीलों की मान्यताएँ एवं आस्थाएँ वैज्ञानिक अध्यात्मवाद से जुड़ी हैं। विश्वभर के विचारशील इसे देखने आते तथा प्रभावित होकर जाते हैं।

➢यहाँ के विशाल भोजनालय में प्रतिदिन प्राय: पाँच हजार से अधिक आगन्तुक श्रद्धालु तथा अनुमति लेकर आये शिक्षार्थी बिना मूल्य भोजन प्रसाद पाते हैं।

➢यहाँ का पत्राचार विद्यालय भारत एवं विश्व भर में बैठे जिज्ञासुओं, प्रज्ञा परिजनों को दैनन्दिन जीवन की उलझनों को सुलझाने का मार्गदर्शन देता रहता है।

➢गरीबी तथा बेकारी उन्मूलन की आर्थिक क्रान्ति के अन्तर्गत औसत भारतीय स्तर की आजीविका उपार्जन हेतु यहाँ एक स्वावलम्बन विद्यालय विनिर्मित है, जिसमें छोटे कुटीर उद्योगों से उपार्जन का नि:शुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ के रचनात्मक प्रकोष्ठ द्वारा ग्राम्य विकास तथा गौशालाओं की स्थापना संबंधी प्रशिक्षण वर्ष भर चलाये जाते हैं। देश भर में स्वावलम्बी ग्राम्य विकास के मॉडल भी खड़े किये गये हैं। साधना, शिक्षा, स्वावलम्बन एवं आयुर्वेद के पुनर्जीवन जैसी विचारधाराओं पर केन्द्रित एक विराट् देव संस्कृति विश्वविद्यालय स्तर की स्थापना इन्हीं दिनों यहाँ की गयी है।

➢सौर ऊर्जा की उपलब्धियों पर आधारित तथा पवन ऊर्जा से चालित उपकरण यहाँ स्थापित हैं, जिनसे वैकल्पिक ऊर्जा का ग्रामीण क्षेत्र के परिजनों को शिक्षण दिया जाता है।

➢जन-सामान्य में जन-जागरण तथा लोक-शिक्षण के उद्देश्य से यहाँ के आधुनिकतम वीडियो स्टूडियो में, नाटक, गीत, एक्शन सांग तथा छोटी-छोटी टेलीफिल्में तैयार कर जन-जन तथा केबल नेटवर्क के माध्यम से घर-घर पहुँचायी जाती हैं।

➢अध्यात्म के गूढ़ विवेचनों की सरल व्याख्या कर उन्हें जीवन में कैसे उतारा जाय, अपने चिन्तन, चरित्र एवं व्यवहार में उत्कृष्टता लाकर व्यक्तित्व को कैसे प्रभावकारी बनाया जाय, इसका सतत प्रशिक्षण यहाँ के नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्रों में चलता है, जो यहाँ वर्ष भर संपादित होते रहते हैं।

➢लोकसेवियों का सर्वांगपूर्ण शिक्षण करके धर्मतंत्र से लोकमानस का परिष्कार यहाँ का एक विशिष्ट कार्यक्रम है। एक मास के सत्रों में प्राय: पाँच सौ से अधिक भावनाशील कार्यकर्त्ता नैतिक, बौद्धिक तथा सामाजिक क्रान्ति का परिपूर्ण शिक्षण लेने प्रतिमास आते हैं। शिक्षण, निवास एवं भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क है।

➢केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों के विभिन्न पदाधिकारियों को यहाँ नैतिक, बौद्धिक तथा व्यक्तित्व परिष्कार का शिक्षण पाँच दिवसीय सत्रों में दिया जाता है। अब तक अस्सी हजार से अधिक अधिकारी इन मूल्य परक शिक्षणों से लाभ पा चुके हैं।

➢यहाँ हिमालय की एक दिव्य विराट् प्रतिमा स्थापित की गयी है, जिसमें सभी तीर्थों का दिग्दर्शन साधकों को वहाँ के इतिहास की पृष्ठभूमि के साथ मल्टीमीडिया प्रोजेक्शन पर किया जाता है। प्राय: साठ फुट चौड़ी, पंद्रह फुट ऊँची प्रतिमा के समक्ष बैठकर ध्यान करने का अपना अलग ही आनन्द है। दर्शनार्थी पंक्तिबद्ध हो प्रतीक्षारत रह पंद्रह मिनट के अंतर से होने वाले इस ध्यान क्रम में सम्मिलित होते हैं।

➢यहाँ से **'अखण्ड ज्योति'** एवं **'युग निर्माण योजना'** नामक हिन्दी मासिक तथा **युग शक्ति गायत्री** गुजराती, मराठी, उड़िया, बंगला, तमिल अंग्रेजी एवं तेलुगू आदि भारत की लगभग सभी भाषाओं में तथा प्रज्ञा अभियान पाक्षिक हिन्दी व गुजराती में प्रकाशित होती हैं। भारत और विश्व में इन सभी पत्रिकाओं के पाठकों की संख्या लगभग पच्चीस लाख है।

➢गायत्री परिवार के संस्थापक परम पूज्य गुरुदेव पं०श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा गायत्री महाविद्या, जीवन जीने की कला, व्यक्ति, परिवार तथा समाज निर्माण जैसे विषयों पर तीन

हजार से अधिक पुस्तकें लिखी गयी है, जिनका प्रकाशन गायत्री तपोभूमि एवं अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा द्वारा हिन्दी एवं अन्यान्य दस भाषाओं में किया गया है। इस युग साहित्य ने करोड़ों व्यक्तियों को निरन्तर प्रभावित-परिवर्तित किया है। गायत्री महाविज्ञान तीन भागों में, प्रज्ञा पुराण चार खण्डों में, समग्र आर्ष साहित्य तथा वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर लिखा गया साहित्य विशेष रूप से लोकप्रिय हुआ है। वेदों के नवीनतम वैज्ञानिक रहस्यों को उद्घाटित करने वाले भाष्य विद्वज्जनों के लिए प्रेरणादायी सिद्ध हो रहे हैं। इस पूरे साहित्य को १०८ वाङ्मय में क्रमबद्ध कर इसकी स्थापना देश-विदेशों में की गयी है।

➢परम पू०गुरुदेव पं०श्रीराम शर्मा आचार्य जी को १९६४ में सम्पन्न सर्वधर्म सभा में तत्कालीन पंजाब के गृहमंत्री श्री मोहन लाल शर्मा द्वारा लाइट ऑफ इण्डिया की उपाधि, १९७६ में उ०प्र० के तत्कालीन राज्यपाल माननीय डॉ.एम.चेन्नारेड्डी द्वारा संस्कृत एकेडेमी की सम्मानास्पद सदस्यता, २९ जन. ८८ को उत्तरप्रदेश शासन द्वारा ताम्रपत्र एवं स्वाधीनता संग्राम सेनानी सम्मान पत्र जैसे सम्मान दिये गये।

➢२७ जून १९९१ को तत्कालीन उपराष्ट्रपति महामहिम डॉ. शंकरदयाल शर्मा जी द्वारा परम पूज्य गुरुदेव के सम्मान में **एक रुपये का रंगीन डाक टिकट** जारी किया गया। महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने अपनी पुस्तक देशमणि में २४ महापुरुषों को स्थान दिया है। उसमें केवल भारत-रत्न श्री लाल बहादुर शास्त्री तथा पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के सम्बन्ध में दो-दो लेख दिए हैं।

➢कृषि मंत्रालय भारत सरकार द्वारा शान्तिकुञ्ज को प्राकृतिक विपत्ति निवारण सलाहकार परिषद की सदस्यता प्रदान की गई है। भूकम्प व अन्य दैवी आपदाओं में केन्द्र ने जन व धन शक्ति से सदैव मदद की है। कारगिल संकट पर सारे भारत से गायत्री परिवार ने सवा करोड़ रुपये की राशि राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में दी है।

➢इस आश्रम में समय-समय पर माननीय श्री एम.चेन्नारेड्डी, श्री सत्यनारायण रेड्डी (दोनों तत्कालीन राज्यपाल), श्री अर्जुन सिंह (पूर्व मानव संसाधन मंत्री), श्री विद्याचरण शुक्ल (संसदीय कार्य मंत्री), श्री श्रीपति मिश्र (पूर्व मूख्यमंत्री उ०प्र०) श्री दिग्विजय सिंह (मुख्यमंत्री म०प्र०), श्री मुलायम सिंह (मुख्यमंत्री उ०प्र०), श्री भैरोसिंह शेखावत (मुख्यमंत्री राजस्थान), श्री अमर सिंह चौधरी (पूर्व मुख्यमंत्री गुजरात), श्रीमती मोहसिना किदवई, श्री इब्राहिम कुरैशी, श्री मुरली मनोहर जोशी, श्री चंद्रशेखर सिंह (भू.पू.प्रधानमंत्री) तथा प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जूभैया), महामहिम दलाईलामा आदि अनेक महानुभाव पधार चुके हैं। इन सबने इस आश्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

➢शान्तिकुंज के प्रयत्नों से देश भर में ४००० से अधिक भव्य गायत्री शक्तिपीठें बनी हैं। इनके माध्यम से जन-जन में आस्था विस्तार तथा नैतिक पुनरुत्थान के कार्यक्रम दस लाख लोकसेवी कार्यकर्ताओं के द्वारा चलाये जाते हैं।

➢जन-जन में देवसंस्कृति का संवर्धन तथा आस्था संवर्धन हेतु शान्तिकुंज से प्रज्ञा टोलियाँ, जीप कार एवं साइकिलों से देश भर तथा विदेश में भेजी जाती हैं। स्थान-स्थान पर यज्ञ, दीपयज्ञ, संस्कार तथा साधना सत्र आयोजित कर ये टोलियाँ लोक शिक्षण तथा ज्ञानालोक वितरण करती हैं।

➢बंदी जीवन में सुधार के लिए गायत्री परिवार द्वारा देशभर में कारागारों में कैदियों के जीवन में सुधार के लिए विभिन्न कार्यक्रम आन्दोलन के रूप में चलाये जा रहे हैं।

➢देवसंस्कृति दिग्विजय अभियान के क्रम में शान्तिकुञ्ज द्वारा देश-विदेश में २७

अश्वमेध महायज्ञ, एक वाजपेय यज्ञ, एवं एक विराट् अर्धपूर्णाहुति कार्यक्रम सम्पन्न किये गये हैं। न केवल पर्यावरण अपितु अन्य वैज्ञानिक प्रयोगों में भी इन यज्ञों को बहुत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इनवायरनमेंटल एण्ड टेक्निकल कंसेल्टेण्ट्स के निदेशक ने उत्तरप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की सहायता से गोरखपुर अश्वमेध यज्ञ के पर्यावरण पर प्रभाव का अनुसंधान करके बताया कि यज्ञ से हवा में सल्फर डाय आक्साइड की मात्रा ३.०३६ माइक्रोग्राम से घटकर ०.८ माइक्रोग्राम रह गयी। इसी प्रकार नाइट्रोजन मोनोआक्साइड की मात्रा १.१६ माइक्रोग्राम से घटकर १.०२ माइक्रोग्राम हो गयी। यज्ञ से पूर्व १०० मि.लि. पानी में ४५०० बैक्टीरिया थे, जो यज्ञ के बाद घटकर केवल १२०० ही रह गये। यज्ञ के द्वारा पर्यावरण पर पड़ने वाले इन संतोषजनक परिणामों को देखकर शान्तिकुञ्ज द्वारा भारत सरकार से सम्पर्क किया गया है, जिससे कि संयुक्त राष्ट्रसंघ के माध्यम से यज्ञोपचार प्रक्रिया (यज्ञोपैथी) पर विश्वभर में होने वाले अनुसंधान कार्यों को प्रोत्साहित तथा विस्तारित किया जा सके। यज्ञोपैथी पर एक विराट् तंत्र की स्थापना शान्तिकुञ्ज में की गयी है।

➢ समूचे राष्ट्र की कुण्डलिनी जागरण के लिए परम पूज्य गुरुदेव ने युग संधि महापुरश्चरण की घोषणा की थी, इसके अंतर्गत लगभग चौबीस लाख व्यक्ति प्रतिदिन लगभग २४० करोड़ गायत्री मंत्र का महानुष्ठान कर रहे हैं। इसकी प्रथम पूर्णाहुति ३ से ७ नवम्बर ९५ में पूज्य गुरुदेव की जन्मस्थली आँवलखेड़ा आगरा में की गई। इसमें प्राय: ५० लाख परिजनों ने भाग लिया। दूसरी पूर्णाहुति सन् २००० में पाँच चरणों में सम्पन्न होगी, जिसमें लगभग एक करोड़ साधक सम्मिलित होंगे।

➢ स्वास्थ्य सेवाओं की दृष्टि से हमारे गाँव नितान्त उपेक्षित हैं। इस उपेक्षा के निवारण के लिये गायत्री परिवार द्वारा सारे देश में चल ग्राम्य चिकित्सा सेवा प्रारम्भ की गई है। प्रारम्भ आगरा-आँवलखेड़ा से किया गया है, सारे देश में इसका विस्तार किया गया है। न केवल स्वास्थ्य परीक्षण अपितु नि:शुल्क औषधियाँ देने की पूरी व्यवस्था की गई है। ग्रामवासियों को बौद्धिक शिक्षण भी दिया जाता है।

➢ भावी योजनाओं में आयुर्वेद शोध अनुसंधान केन्द्र और मल्टीवर्सिटी की स्थापना मुख्य है। इसके लिए शान्तिकुञ्ज के पास ही जमीन उपलब्ध की गयी है। भूमिपूजन हो चुका है, शीघ्र ही स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में मिशन की सेवाएँ अपने गौरव के साथ प्रकट होंगी।

➢ दैवी सत्ता द्वारा परोक्ष रूप से संचालित इस विराट् मिशन की सारी व्यवस्था लाखों व्यक्तियों द्वारा प्रतिदिन एक मुट्ठी अनाज एवं बीस पैसे की राशि से ही विगत पचास वर्षों से चल रही है। निष्ठावान परिजन एक से चार घण्टे नित्य समय, एक-एक दिन की आजीविका इस पुण्य प्रयोजन के लिए देते हैं।

➢ लगभग एक हजार उच्च शिक्षित कार्यकर्ता यहाँ स्थायी रूप से सपरिवार निवास करते हैं। निर्वाह हेतु वे औसत भारतीय स्तर का भत्ता मात्र संस्था से लेते हैं।

➢ इस प्रकार शान्तिकुंज एक ऐसी स्थापना है, जिसे सच्चे अर्थों में युग तीर्थ कहा जा सकता है। यहाँ आने वाला व्यक्ति कृतकृत्य होकर जाता है एवं नैसर्गिक सौन्दर्य तथा आध्यात्मिक ऊर्जा से अनुप्राणित वातावरण में बार-बार आने के लिए लालायित रहता है। इस स्थापना के दर्शनार्थ सबका सहर्ष आमंत्रण है। आश्रम देखने वालों के लिए नि:शुल्क गाईड की व्यवस्थ है। किसी भी शिविर में यहाँ आने से पूर्व अनुमति पत्र अवश्य मँगा लें, पता निम्नानुसार है-

सम्पर्क सूत्र :- गायत्री तीर्थ-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उ.प्र.) पिन २४९४११

फोन-(०१३३) ४६१३२७, ४६१३२८, ४२४३०९, ४२६४०३, ४२१०५५, ४२५४१९ फैक्स (०१३३) ४२३८६६

गायत्री तीर्थ–शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

(कृपया सुन्दर लिपि में लिखें)

(जिस उद्देश्य से आये हैं, उसे स्पष्ट शब्दों में लिखें)

जैसे–दर्शनाथ/संस्कार सत्र/युग शिल्पी सत्र/नौ दिवसीय साधना सत्र/व्यक्तित्व परिष्कार सत्र/विशेष सत्र ....

दिनांक .... से .... तक

ठहरने का स्थान

पूरा नाम . . . .

पिता/पति का नाम . . . .

पूरा पता मु० . . . . पो० . . . .

जिला . . . . प्रान्त . . . .

टेलीफोन नं० (एस.टी.डी. कोड सहित) . . . .

शैक्षणिक योग्यता . . . . उम्र . . . .

व्यवसाय/वर्तमान पद तथा स्थान(जहाँ कार्यरत हैं) . . . .

. . . .

इससे पहले शान्तिकुञ्ज आये हों, तो उसका विवरण लिखें . . . .

. . . .

मिशन की कौनसी पत्रिका मँगा रहे हैं? और कब से?. . . . .

. . . .

पत्रिकाओं की सदस्य संख्या . . . .

संस्था में कब से जुड़े हैं? . . . .

यदि सक्रिय हैं, तो कौन सी गतिविधियाँ चलाते हैं? . . . .

. . . .

साथ आये सदस्यों के नाम,	संबंध,	उम्र	शिक्षा
१)	. . . . . .	. . . .	. . . .
२)	. . . . . .	. . . .	. . . .
३)	. . . . . .	. . . .	. . . .
४)	. . . . . .	. . . .	. . . .
५)	. . . . . .	. . . .	. . . .
६)	. . . . . .	. . . .	. . . .
७)	. . . . . .	. . . .	. . . .
८)	. . . . . .	. . . .	. . . .
९)	. . . . . .	. . . .	. . . .
१०)	. . . . . .	. . . .	. . . .

यदि कोई वाहन साथ हो, तो वाहन का प्रकार एवं नं० . . . .

. . . .

साथ आये व्यक्तियों को आश्रम के अनुशासन समझाने एवं उनका पालन कराने का उत्तरदायित्व मैं निभाऊँगा।

दिनांक . . . . समय . . . .

नोट :- नकद राशि एवं कीमती सामान (जेवर आदि) 'अमानत कक्ष' में जमा कर रसीद प्राप्त करें।

हस्ताक्षर

Gayatri Teerth, Shantikunj Haridwar

(Please write in clear readable form)

Purpose of visit :
(viz. Darshan, Sanskar, Shivir): . . . .

Duration of Stay: From: . . . . To: . . . .

Place of Stay in Shantikunj: . . . .

Name: . . . .

Father's / Husband's Name : . . . .

Address: . . . .

. . . .

. . . .

Telephone / Fax / Email: . . . .

. . . .

Passport No. : . . . .

VISA : . . . .

Educational Qualification : . . . .

Occupation : . . . .

Details of Earlier Visit to Shantikunj: . . . .

Membership of Mission's Magazine : . . . .

Family Member Details :

SNo.	Name	Relationship	Age	Education
1.	. . . .			
2.	. . . .			
3.	. . . .			
4.	. . . .			
5.	. . . .			
6.	. . . .			

Vehicle No. and Type : . . . .
. . . .

I am acquainted with the disciplines of the Ashram and will abide by them. I will also communicate the same to my co-visitors and ask them to follow the disciplines.

Date : . . . .   Time : . . . .

Signature

N.B. : Kindly deposit your valuables and cash at the Security Deposit Counter for Security reasons.